भूमिका

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध 'डॉ0 बलदेव वंशी के काव्य में सामाजिक चेतना' शोध की दृष्टि से एक अत्यन्त विनम्र प्रयास है ।

छात्र जीवन से ही यथार्थवादी काव्य में मेरी विशेष रूचि रही है और इसी रूचि के अनुकूल ही मुझे पी0 एच0 डी0 में समाज से सम्बन्धित विषय के काव्य पर शोध कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है ।

सामाजिक चेतना को कवि की कविताओं में आए प्रभाव के आधार पर, नए व प्राचीन सामाजिक मूल्यों के आधार पर तथा समाज के निरन्तर बदलते स्वरूप में सामाजिक राजनीतिक उठा–पटक आदि का विश्लेषण करना व वंशी के काव्यो में आए सामाजिक, दार्शनिक, धार्मिक व राजनीतिक पहलुओं का विश्लेषण करना ही प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की अन्तरवर्ती चेतना कही जा सकती है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है । इन अध्यायों को निम्न प्रकार से सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक पक्षों में समेटा गया है –

प्रथम अध्याय में सामाजिक चेतना के विविध रूपों का वर्णन है, जैसे मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, व्यक्तिवाद और समाजवाद । समाज के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है । काव्य में सामाजिक चेतना का विश्लेषण करते हुए अन्त में डॉ0 वंशी के काव्य में सामाजिक चेतना के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में डॉ0 वंशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को वैचारिक स्तर पर समझने का प्रयास किया गया है । डॉ0 वंशी के जन्म, परिवार, शिक्षा, सेवा आदि पर विस्तार से दृष्टि डाली गयी है तथा पुरस्कार व उपलब्धियों का विवरण भी दिया गया है । कृतित्व

खण्ड में डॉ0 बलदेव वंशी के सभी काव्य संग्रहों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । वंशी जी की कविताओं में आए सन्दर्भों जैसे पौराणिक, मिथकीय और सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक में विविधता तथा अनुभूति की प्रामाणिकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत वंशी जी के काव्य में समाजाध्यात्म चेतना पर प्रकाश डाला गया है । धर्म का उद्देश्य, ईश्वर की सर्वव्यापकता, पुरूष व प्रकृति का सम्बन्ध व आध्यात्मिक चेतना के साथ–साथ सामाजिक चेतना पर वंशी जी की काव्य चेतना का मौलिक स्वरूप क्या है, उस पर प्रकाश डाला गया है ।

चतुर्थ अध्याय में सामाजिक चेतना के अन्तर अनुशासनिक आयाम इतिहास बोध, दिक्काल बोध, विज्ञान बोध, प्रकृति संदर्भ, पत्नी और बच्चा मिथक का विस्तार से वर्णन किया गया है ।

पंचम अध्याय में सामाजिक चेतना के अन्तर्गत सृजन भाषा और विचार का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है । वंशी के काव्य में भाषा का सृजनात्मक स्वरूप स्पष्ट करते हुए उनके काव्य में बिम्ब, प्रतीक, मिथक, भाषा, कल्पना तथा भाव का विचार के साथ सम्बन्ध, को स्पष्ट किया गया है ।

षष्टम अध्याय में लम्बी कविताओं में मिथक, अवधारणा व काव्य रूप तथा मिथक काव्य में समकालीन अवधारणा के सन्दर्भ में वंशी जी की लंबी कविताओं में सामाजिक सरोकार व उनके मिथक काव्य में सामाजिक सरोकार को स्पष्ट किया गया है । इसी सन्दर्भ में वंशी जी की तीन लम्बी कविताओं आत्मदान, मन्यु, वाक् गंगा पर दृष्टि डाली गयी है ।

अन्त में उपसंहार रूप में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निष्कर्ष और मूल्याँकन को प्रस्तुत किया गया है।

आधुनिक साहित्य के सुप्रतिष्ठित समीक्षक एवं उत्कृष्ट कवि श्रद्धेय डॉ0 बलदेव वंशी का मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। शोध कार्य के अन्तर्गत उनसे सम्पर्क बना रहा व अपनत्व भरा सहयोग प्राप्त हुआ । उनके द्वारा महत्वपूर्ण जानकारी मिलती रही, जो मेरे शोध कार्य के लिए अति आवश्यक थी।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्रद्धेय डॉ0 पूर्णमल गौंड प्रिंसीपल डी0 ए0 वी0 कॉलेज, करनाल के सफल निर्देशन में सम्पन्न हुआ है। उनके आत्मीय स्नेह व विशेष कृपा दृष्टि और दिशा निर्देशन के कारण ही, मैं इस श्रम साध्य विषय पर लिखने का साहस कर सकी हूँ। यदि उनका निर्देशन और स्नेह युक्त सहयोग प्राप्त न हुआ होता तो यह शोध–कार्य सम्पन्न होना अत्यन्त कठिन था।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को पूर्णता प्रदान करने में श्रद्धेय डॉ0 नरेश मिश्रा अध्यक्ष हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के प्रति सहृदय आभार व्यक्त करना मैं अपना नैतिक कर्तव्य समझती हूँ, क्योकि इनकी अनुमति के बिना शोध–कार्य सम्पन्न करना मेरे लिए असम्भव था।

मैं उन समस्त विद्वानों के प्रति भी नतमस्तक हूँ, जिनकी महत्वपूर्ण रचनाओं का मैंने इस लेखन में सदुपयोग किया है।

शोध–कार्य सम्पन्न में श्रद्धेय पिताजी (श्री जिले सिंह खटक) ने मेरा मनोबल बनाए रखा और हर प्रकार से साथ दिया। उनकी सद्प्रेरणा के प्रति हृदय से आभारी हूँ।

मैं अपने पति श्री राजेन्द्र चौधरी का भी आभार प्रकट करती हूं, जिन्होंने कदम–कदम पर मुझे प्रोत्साहित किया तथा सहयोग दिया । शोध प्रबन्ध की सम्पन्नता को करवाने का श्रेय उन्हीं को जाता है ।

मैं एक कामकाजी महिला हूं, अतः भाग दौड़ के जीवन में से जो भी समय मेरे बच्चों पुलकित (चिंटू) व स्वपनिल (मिंटू) के लिए था । उनसे यह अमूल्य समय छीनकर मैंने शोध–प्रबन्ध को पूरा करने में लगा दिया है, भविष्य में कैसे उसकी पूर्ति होगी, पता नहीं, किन्तु उनके प्रति मैं विशेष रूप से ऋणी हूं ।

मेरे हितैषी तथा अवलम्ब देने वाले वे सभी व्यक्ति धन्यवाद के पात्र हैं, जिनसे मुझे हर प्रकार का सहयोग व प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है ।

स्वच्छ टंकण–कार्य के लिए मैं श्री मित्तल की भी हृदय से आभारी हूं जिन्होंने पूर्ण एकाग्रता व तन्मयता के साथ शोध–प्रबन्ध का कार्य सम्पन्न करने में पूर्ण सहयोग दिया।

लेखन व टंकण में अत्यन्त सावधानी रखते हुए भी कतिपय अशुद्धियों का रह जाना अस्वाभाविक नहीं, जिनके लिए मैं क्षमा याचना करती हूं ।

दिनांक

विनीता
सन्तोष खटक